आसरा सेवा संस्थान वाराणसी
त्रैमासिक रिपोर्ट जूलाई-सितम्बर २००७

शिक्षा कार्यक्रमः

मनकइयाँ सेन्टरः

इस सेन्टर में पढ़ रहे सभी बच्चों में शिक्षा के प्रति अब गजब की ललक है। पहले अध्यापिका द्वारा बच्चों को घर -घर जाकर बुलाना पडता था परन्तु अब टीचर के आने के पहले सारे बच्चे उपस्थित हो जाते है। जिसमें यहां के टीचर उषा देवी का विशेष योगदान है। जुलाई से सितम्बर माह में बारिष का मौसम होने के नाते सेन्टर का कार्य कभी कभी वाधित हो जाता है क्योकि सेन्टर खुले आसमान के नीचे चलता है। जुलाई माह में ७ मुसहर बच्चों को छोड़कर सभी बच्चों का एडमीशन प्राथमिक विद्यालय में हो गया है। परन्तु आज भी बच्चों के अनुसार जो आजादी एवं अभिव्यक्ति इस सेन्टर पर मिलती है। व प्राथमिक विद्यालय में नहीं मिल पाता है परन्तु मुसहर बस्ती के बच्चे अभी भी आजिविका के चलते नियमीत रूप से सेन्टर नही आ पाते इस वजह से इनका एडमीशन प्राथमिक विद्यालय में नही हो पाता है। क्योंकि सरकारी स्कूल चाहते है कि इनकी उपस्थिति प्रतिदिन हो जो सम्भव नही हैं इस सेन्टर के टीचर उषा देवी के उपर कानपुर टीम द्वारा कैथी में दी गयी टीचर ट्रेनिंग का बहुत सकारात्मक प्रभाव पड़ा और खुद टीचर में भी आत्मविश्वास बढ़ा अगस्त माह में आजादी के दिन सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन हुआ जिसमें सेन्टर के बच्चों ने अपने प्रस्तुति से सबका मन मोहा।

<u>जोगापुर सेन्टरः</u> इस सेन्टर में अध्यापन कार्य मुख्य रूप से अवधेश गोड़ जी देखते है। जुलाई माह से ही वर्षा शुरू हो जाने के नाते सेन्टर के संचालन में दिक्कते आती रहती है। इसके साथ ही इस समय धान की फसल की निराई गुडाई के

चलते अध्यापन का कार्य अगस्त माह में सुचारू रूप से नही चल पाया परन्तु अब मुख्य सेन्टर सुचारू रूप से चल रहा है एवं सारी गडबड़ियां दूर कर ली गयी।

<u>कंसरायपुर प्राथमिक विद्यालयः</u> इस प्राथमिक विद्यालय में सरकारी स्कूल के साथ संस्था द्वारा कार्य करना उम्मिंद से ज्यादा सफल रहा पहले जहा सिर्फ पढ़ने में कमजोर २० बच्चों की जिम्मेंदारी ली गयी थी वही टीचर अशोक कुमार को पुरी कक्षा १ की जिम्मेंदारी निभानी पड़ रही है। इसी के साथ पूर्व वर्ष के बच्चे जो अब कक्षा २ में पढ़ रहे है वे भी टीचर के रूप में अशोक जी की मांग कर रहे हैं। कानपुर के साथियों द्वारा दी गयी टीचर ट्रेनिंग द्वारा प्रयोग बच्चों में करने से उनमें गजब की गुणवत्ता का सुधार हुआ है। जिसके कारण हेडमास्टर द्वारा संस्था से एक और अध्यापक की मांग की जा रही हैं जुलाई माह में स्कूल चलो अभियान के तहत बच्चों के साथ रेली निकाली गयी ताकि बच्चों पढ़ाई के प्रति ललक जागे एवं सभी बच्चों का एडमिशन सुनिश्चित हो सकें। इसी माह में कक्षा १ के सभी बच्चों का स्वास्थ्य नियमित रूप से चेक होता रहा। अगस्त माह में आखों की बिमारी (कन्जक्टिवाइटिस) के चलते दर्जनों बच्चों की आंखों की जांच की गयी और दवाई दी गयी १५ अगस्त के दिन स्कूल में एक बड़ा कार्यक्रम हुआ कक्षा १ के बच्चों ने भी अपनी उपस्थिति दर्ज कराई ५ सितम्बर को बच्चों के बीच पेड़ पोधों एवं बनों के महत्व पर संबाद हुआ जिसमें बनों का हमारे जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है। पर प्रकाश डाला गया।

<u>दिक्कतें</u> <u>:</u> अब ग्राम वासी ५ साल तक के बच्चों को भी स्कूल में भेज रहें हैं। जिससे अध्यापन कार्य में दिक्कतें आ रही है। जबकि उक्त बच्चों को ऑगनवाड़ी में भेजा जाना चाहिए।

सिलाई प्रशिक्षण कार्यक्रमः महिलाओं में स्वावलम्बन की दिशा में कार्य कर रहें सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र में इस वक्त १८ लड़कियां प्रशिक्षण ले रही है। वर्तमान में कढ़ाई (इम्ब्राइडरी) प्रशिक्षण का कार्य भी शुरू हो जाने के चलते अब व्यावसायिक रूप से सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र अग्रसर है।

भोजन का अधिकारः इस कार्यक्रम के तहत १२ से १४ सितम्बर २००७ को वाराणसी जिला मुख्यालय पर मनकइया सेन्टर के बच्चे अपने माता पिता के साथ विभिन्न मांगों को लेकर ३ दिवसीय धरना का आयोजन हुआ जिसमें राशन कार्ड, जमीन आवंटन एवं आवास की मांगों को रखा गया।

पुस्तकालयः

मनकइयाः इस पुस्तकालय के पचास पुस्तकें प्रति सप्ताह अशोक जी द्वारा कन्सराय पुर प्राथमिक विद्यालय के बच्चों के बाटी जा रही हैं इसके साथ ही गांव के बच्चों में भी बाटी जा रही है। परन्तु जुलाई से सितम्बर माह तक बरसात का मौसम होने के नाते इसका वितरण सिमित रखा जा रहा हैं। इन ३ माह में १८२ बच्चों को किताबें बाटी गयी।

जोगापुरः इस सेन्टर में ३ माह में ११२ किताबें बाटी गयी।

आसरा सेवा संस्थान

अगले वर्ष का कार्यक्रम जनवरी २००८ से दिसम्बर २००८ तकः

सरकारी स्कूल के साथ कार्यः

पिछले साल में कंसरायपुर प्राथमिक विद्यालय के साथ कार्य करने का अनुभव उम्मींद से भी ज्यादा सफल रहा। प्रारम्भ में यह तय था कि पढ़ने में कमजोर २० बच्चों को ही लिया जायेगा परन्तु अध्यापक की कमी एवं बच्चों के भविष्य को देखते हुए पूरी क्लास स्कूल के हेडमास्टर द्वारा दिया गया आशा द्वारा दी गयी ट्रेनिंग पद्धति द्वारा बच्चों को जब पढाया

जाने जगा तो उनमें गजब का आत्म विश्वास आया। साथी अशोक कुमार द्वारा पढ़ाए जाने के बाद जो सूधार आए वो निम्न है।

०१. पहले काफी बच्चे स्कूल छोड़कर (ड्राप आऊट) चले जाते थे परन्तु अब काफी हद तक कम हो गया है।
०२. पहले फीस में भ्रष्टाचार ज्यादा होता था। २०४० रूपये के स्थान पर ४० रूपये तक लिये जाते थे जो अब २०४० ही लिये जाते है।
०३. पहले बच्चे अध्यापकों से काफी घबरातें थे अब वे टीचर के साथ खुलकर बाते कर सकते है।
०४. पहले बच्चों के साथ स्वास्थ्य की समस्यायें ज्यादा आती थी परन्तु नियमित जॉच के बाद अब कमी आ गयी हैं।
०५. मिड डे मिल में पहले काफी गड़बड़िया की जाती थी जैसे मिनु के अनुसार भोजन न देना, मात्रा में कमी करना, भोजन ठीक से न पकना आदि परन्तु अब सोमवार को छोड़कर (रोटी, पुड़ी सब्जी) शेष सभी दिन मिनु के अुनसार दिये जाते हैं परन्तु अब भी गड़बडि कर देते है।
०६. ग्राम सभा द्वारा गठित ग्राम शिक्षा समिति भी अपनी जिम्मेंदारियों को महसूस करने लगी है। और वह स्कूल के मामले में दखल दे रही है।

खरगराम पुर प्राथमिक विद्यालयः इस स्कूल में ३०० दलित एवं मुसलिम बच्चें पढ़ रहें है जबकि अध्यापक सिर्फ २ है। जिसके वजह से बच्चें ठीक ढ़ंग से शिक्षा ग्रहण नहीं कर पा रहें है। उक्त समस्या को देखते हुए कंसरायपुर की तर्ज पर यहां भी एक अध्यापक अध्यापन का कार्य करेगा।

स्वास्थ्य शिक्षाः वर्ष २००७ में स्वास्थ्य शिक्षा में किये गये सामुहिक प्रयास का नतीजा रहा कि अब बच्चों में स्वास्थ्य सम्बंधी बिमारियां कम हो रही है। अब तक सिर्फ प्राथमिक विद्यालय के कक्षा १ के बच्चों को ही स्वास्थ्य शिक्षा की जानकारी दी जाती रही अब पुरे प्राथमिक विद्यालय के बच्चों का शामिल किया जायेगा। और गांव के शेष बच्चों (१० से १४ वर्ष) को भी इसकी जानकारी दी जायेगी। प्रत्येक वर्ष की तरह १० नवम्बर को एक बड़े स्वास्थ्य मेला का आयोजन किया जायेगा जिसमें लगभग ५०० बच्चों का स्वास्थ्य परीक्षण कराने का लक्ष्य है।

पर्यावरण शिक्षाः वनों का कितना महत्व है आज के जीवन में यह बात आज सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। और पूर्व की भांति इस वर्ष भी

०१. पर्यावरण के प्रति बच्चों में जागरूकता लाना
०२. पर्यावरण शिक्षा प्रदान करना
०३. पर्यावरण रैली का आयोजन करना
०४. वृक्षारोपण करना

सिलाई प्रशिक्षणः वर्तमान में सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र की एक और शाखा मनकइयां में ही खोल दी गयी है। जिसमें सिलाई प्रशिक्षण के साथ-साथ कढ़ाई प्रशिक्षण कार्य भी होता है जो सिमित संसाधन के बाउजुद अग्रसर है सिलाई प्रशिक्षण के पहले केन्द्र में १८ लड़किया प्रशिक्षण ले रही है। जबकि कढ़ाई में ११ महिलाएं पंजीकृत है। परन्तु सिर्फ एक कढ़ाई की उपलब्धता के कारण कठिनाई महसुस हो रही है।

भूमिकाः

अशोक कुमार- जैसा तय थाा अशोक कुमार मुख्य रूप सरकारी स्कूल में २० बच्चों के साथ ३ घंटे अध्यापन का कार्य करेगें

परन्तु उनकी शैली एंव उपयोगिता को देखते हुए ६ घंटे एवं ६५ बच्चों के साथ कार्य करना पड़ रहा हैं वर्ष २००८ में ५ गांवों के बच्चों को ‘स्कूल में एडमीशन कराना पर्यावरण शिक्षा आदि का अतिरिक्त कार्य भी देखेगें।

ै**<u>कोआर्डीनेशनः</u>** वर्ष २००८ में निम्नलिखित कार्य भी अतिरिक्त कार्य भी देखे जायेगें।

०१. शिक्षा के अधिकार पर जागरूकता लाने के लिए पद यात्रा का आयोजन।

०२. सूचना के अधिकार पर गांव में कार्य करना

०३. ६ से १४ वर्ष की लड़कियों (ड्राफ आउट का प्रतिसत ज्यादा) का शत प्रतिशत एडमीशन सुनिश्चित कराने के लिए प्रयास करना।

०४. बच्चों के जन्म मृत्यु पंजीकरण प्रकिया को आसान बनाने के लिए जनजागरण करना।

०५. सबको रोजगार उपलब्ध कराने के लिए रोजगार गारन्टी कानून की जानकारी को लोगों तक पहुचाना।

इसके अलावा पूर्व की भॉति कोआर्डीनेशन के समस्त कार्य वर्ष २००८ में भी किये जाते रहेगें।

संघर्ष लक्ष्यों को आसान बनाती है।

अजय पटेल
आसरा संस्थान
वाराणसी
5th Oct 2007